काव्य के भेद

काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से काव्य का विभाजन अनेक प्रकार से किया गया है। संस्कृत काव्यशास्त्र में व्यंग्यार्थ की प्रधानता और अप्रधानता के आधार पर काव्य के मुख्यतः तीन भेद बताए गए हैं–

1. **उत्तम काव्य :** जिस काव्य में वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ अनेक चमत्कारी होता है, उसे उत्तम काव्य माना जाता है। इसे ध्वनि काव्य भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें ध्वनि (व्यंग्यार्थ) की प्रधानता होती है।
2. **मध्यम काव्य :** जिस काव्य में व्यंग्यार्थ अथवा ध्वनि का चमत्कार वाच्यार्थ के चमत्कार की अपेक्षा न्यून होता है अथवा वाच्यार्थ के समान होता है, उस काव्य को मध्यम काव्य माना जाता है। इसे गुणीभूत व्यंग्य काव्य भी कहा जाता है, क्योंकि व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ की अपेक्षा गौण होता है।
3. **अधम काव्य :** जिस काव्य में व्यंग्यार्थ अस्फुट रूप में हो तथा शब्दालंकार, अर्थालंकार तथा वर्ग व्यंजनकता आदि का प्राधान्य हो, उस काव्य को अधम कोटि का काव्य माना जाता है।

रस

काव्य को पढ़ने या सुनने में उसमें वर्णित वस्तु या विषय का शब्द-चित्र मन में बनता है। इससे मन को अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है। इस आनन्द और इसकी अनुभूति को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता, केवल अनुभव किया जा सकता है। यही काव्य में रस कहलाता है। किसी विनोदपूर्ण कविता को सुनकर हँसी से वातावरण गूँज उठता है। किसी करुण-कथा या कविता को सुनकर हृदय में दया का स्रोत उमड़ पड़ता है। यह रस की अनुभूति है।

स्थायी भाव : भाव आनन्द है। काव्य में नौ भाव प्रधान माने गए हैं–प्रेम (रति), हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, घृणा (जुगुप्सा), विस्मय (आश्चर्य) और निर्वेद या वैराग्य। ये मनुष्य के मन में सदैव सुप्तावस्था में विद्यमान रहते हैं। लेकिन अनुकूल अवसर पाकर (कोई काव्य सुनने या पढ़ने पर या कोई नाटक देखने पर) जाग उठते हैं। ये मन में आस्वाद का मूल-भाव होते हैं। चूँकि ये मन में स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं, इसीलिए इन्हें स्थायी भाव कहा जाता है। इन्हीं के फलस्वरूप क्रमशः शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत और शान्त रस की उत्पत्ति होती है।

काव्य के दो अंग होते हैं–भाव और विभाव।

भाव : भाव मन की वह स्थिति है, जो किसी विशेष वस्तु या व्यक्ति के प्रति किसी विशेष दशा में होती है।

विभाव : जिस वस्तु या व्यक्ति के प्रति वह भाव प्रकट होता है, उसे विभाव कहते हैं।

आश्रय : जिसके मन में भाव संचरित होता है, उसे आश्रय कहते हैं। जैसे सीता-स्वयंवर के अवसर पर लक्ष्मण की बातों से परशुराम क्रुद्ध हो जाते हैं। क्रोध का संचार परशुराम के मन में हुआ, अतः परशुराम आश्रय हुए।

आलम्बन : जिसके प्रति भाव उत्पन्न होता है, उसे आलम्बन कहते हैं। उपर्युक्त उदाहरण में परशुराम आश्रय हैं और लक्ष्मण आलम्बन।

उद्दीपन : भावों को उद्दीप्त करने वाले कार्यों या वस्तुओं को उद्दीपन कहते हैं। जैसे उपर्युक्त उदाहरण में लक्ष्मण के कठोर वचन सुनकर परशुराम का क्रोध बढ़ जाता है। अतः लक्ष्मण के कठोर वचन उद्दीपन हैं।

संचारी या व्यभिचारी भाव : जो भाव स्थायी भावों को पुष्ट करते हैं या उनके सहकारी का काम करते हैं और अपना काम करने के बाद स्थायीभाव में ही लुप्त हो जाते हैं, उन्हें संचारी या व्यभिचारी भाव कहते हैं। संचारी या व्यभिचारी भाव 33 माने गए हैं; जैसे–निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, मद, श्रम, आलस्य, दैन्य, चिन्ता, मोह, स्मृति आदि।

रस के भेद

1. **शृंगार रस :** कामदेव का अंकुरित होना या प्रादुर्भाव। इसकी उत्पत्ति का कारण, अधिकांश उत्तम प्रकृति से युक्त रस 'शृंगार' कहलाता है।

   स्थायी भाव–रति अथवा प्रेम।
2. **हास्य रस :** अनोखे अलंकरण आदि असंगतिपूर्ण वस्तुओं या क्रियाओं को देखकर हृदय में जो विनोद का भाव उत्पन्न होता है, वही हास्य रस कहलाता है।

   स्थायी भाव–किसी अनोखे वेश, मूर्खतापूर्ण वचन, ऊटपटाँग चेष्टा आदि अथवा असाधारण कुरूप व्यक्ति को देखने से उत्पन्न रस हास्य रस कहलाता है।
3. **करुण रस :** प्रिय व्यक्ति के पीड़ित या इष्ट वस्तु के अभाव और अनिष्ट वस्तु के प्राप्त होने से हृदय को जो क्षोभ होता है, वह करुण रस कहलाता है।

   स्थायी भाव–शोक।
4. **रौद्र रस :** शत्रु पक्ष या किसी अविनीत की चेष्टाओं, कृतियों अथवा गुरुजनों की निन्दा आदि के कारण उत्पन्न मनोविकार को क्रोध कहते हैं। उससे रौद्र रस का संचार होता है।

   स्थायी भाव–क्रोध
5. **वीर रस :** शत्रु का उत्कर्ष, उसकी ललकार आदि से जो मन में 'उत्साह' उत्पन्न और क्रियाशील होता है वह वीर रस कहलाता है।

   स्थायी भाव–उत्साह।
6. **भयानक रस :** किसी डरावने जीव, प्राणी या पशु आदि को देखने से या घोर अपराध के लिए दण्ड पाने की कल्पना आदि से मन की व्याकुलता को भय कहते हैं।

   स्थायी भाव–भय।
7. **वीभत्स रस :** गंदी, भद्दी, घृणा उत्पन्न करने वाली अशुद्ध वस्तुओं, व्यक्तियों, स्थलों, कार्यों आदि के वर्णन से हृदय में जो ग्लानि होती है, उसी से वीभत्स रस का जन्म होता है।

   स्थायी भाव–जुगुप्सा व घृणा।

8. **अद्‌भुत रस :** 'आश्चर्य' का भाव होने से किसी वर्णन में 'अद्‌भुत रस' का संचार होता है।

   स्थायी भाव–विस्मय या आश्चर्य।

9. **शांत रस :** संसार की असारता, सभी वस्तुओं की नश्वरता आदि का बोध होने से मन को विश्राम मिलता है, जो हृदय में 'शांत रस' का उद्‌भाव करता है।

   स्थायी भाव–निर्वेद।

10. **वात्सल्य रस :** शिशुओं के सौंदर्य, उनके क्रिया-कलाप आदि को देखकर मन बरबस उनकी ओर खिचंता है। फलतः मन में जो स्नेह उत्पन्न होता है, वह वात्सल्य रस कहलाता है।

    स्थायी भाव–स्नेह।

छंद

अर्थ

छन्द शब्द नियम विशेष के आधार पर गति-लय-युक्त रचना होती है। इसमें वर्ण तथा मात्राओं का विशेष प्रतिबन्ध रहता है। इस प्रकार 'पद्य' या 'छन्द' ऐसी शब्द-योजना है, जिसमें मात्राओं तथा वर्णों का नियमित क्रम होता है और उसमें विराम, गति या प्रवाह आदि की व्यवस्था होती है।

छंद रचना

छन्द रचना के शब्दों की मात्राएँ तथा उनके वर्ण होते हैं। मात्रा के आधार पर रचित छन्द या पद्य 'मात्रिक' या 'जाति' और वर्ण के आधार पर निर्मित पद्य 'वृत' या 'वर्णिक' कहे जाते हैं। अक्षर या वर्ण दो प्रकार के होते हैं– ह्रस्व या लघु तथा दीर्घ या गुरु। लघु का चिह्न एक खड़ी पाई (।) और गुरु का चिह्न टेढ़ी रेखा (ऽ) है। लघु-गुरु का संक्षिप्त रूप ल और गु भी है।

मात्रिक विचार

मात्रिक छन्दों में मात्राओं की गणना होती है। 'लघु' में 'एक' तथा 'गुरु' में 'दो' मात्राएँ मानी जाती हैं। यथा–राज शब्द में रा 'दो' मात्रा वाला तथा ज 'एक' मात्रा वाला है। इस प्रकार 'राज' में कुल तीन मात्राएँ हुईं।

लघु मात्राएँ

1. जिन वर्णों के उच्चारण में कम समय लगे अर्थात् अ, इ, उ, ऋ तथा उनसे युक्त वर्ण।
2. जिन वर्णों के ऊपर चन्द्रबिन्दु लगा हो किन्तु वर्ण ह्रस्व हो जैसे हँसना का 'हँ'।
3. पद का अन्तिम वर्ण गति एवं लय के आधार पर दीर्घ होते हुए भी ह्रस्व मान लिया जाता है।
4. कभी-कभी संयुक्ताक्षर के पूर्व का अक्षर लघु मान लिया जाता है जैसे तुम्हारा, कुम्हड़ा।

गुरु मात्राएँ

1. जिन वर्णों के उच्चारण में अधिक समय एवं बल लगे अर्थात् आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ और उनसे युक्त वर्ण।
2. जिन वर्णों में अनुस्वार अथवा विसर्ग के चिह्न लगे हों जैसे मंजन का 'मं', या दुःख का 'दुः'।
3. पद का अन्तिम वर्ण गति एवं लय के आधार पर लघु होते हुए भी दीर्घ हो सकता है।
4. संयुक्ताक्षर के पूर्व का अक्षर ह्रस्व होते हुए भी दीर्घ माना जाता है यथा–धर्म का 'ध'।

वर्णिक-विचार

वर्णिक छन्दों में वर्णों अथवा गणों का ध्यान रखना होता है। गण तीन वर्णों में होता है। गणों की संख्या आठ है। नीचे के सूत्र से गणों का बोध सरल है–

। ऽ ऽऽ । ऽ । । । ऽ

यमाताराज भानसलगा

इस सूत्र का प्रत्येक अक्षर गण का सूचक है। तीन-तीन अक्षरों का समूह बनाकर पहले अक्षर से उनका नाम और उन अक्षरों के लघु-गुरु से उनके स्वरूपों का बोध करना चाहिए। जैसे-यमाता (।ऽऽ।) यगण, मतारा (ऽऽऽ) मगण, ताराज (ऽऽ।) तगण, राजभा) (ऽ।ऽ) रगण, जमान (।ऽ।) जगण, मानस, (ऽ।।) भगण, नसत (।।।) नगण, सलगा (।।ऽ) सगण, ल (।) लघु और गा (ऽ) गुरु।

गणों की पहचान के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए।

गण	वर्ण क्रम	चिहन मात्राएँ	उदाहरण
यगण	लघु गुरु गुरु	।ऽऽ	कहानी, अनूठी
मगण	गुरु गुरु गुरु	ऽऽऽ	आजादी, यूनानी
तगण	गुरु गुरु लघु	ऽऽ।	मारीचि, आमोद
रगण	गुरु लघु गुरु	ऽ।ऽ	सभ्यता, वीरता
जगण	लघु गुरु लघु	।ऽ।	विज्ञान, समाज
भगण	गुरु लघु लघु	ऽ।।	धार्मिक, लोहित
नगण	लघु लघु लघु	।।।	कमल, दिवस
सगण	लघु लघु गुरु	।।ऽ	कमला, जिसकी

प्रत्येक छन्द के चार चरण, होते हैं जो 'पद' या 'पाद' भी कहलाते हैं। बहुत से छन्दों के चारों चरण दो ही पंक्तियों में लिखे जाते हैं। जैसे–दोहा, सोरठा, बरवै आदि ऐसे छन्दों की प्रत्येक पंक्ति 'दल' नाम से प्रसिद्ध है। वर्णिक तथा मात्रिक छन्दों की मुख्य पहचान यह है कि वर्णिक छन्दों में वर्ण लघु-गुरु-क्रम से समान संख्या में होते हैं। इसी कारण इनकी मात्राएँ भी समान होती हैं। इनमें वर्णों की संख्या, समानता को प्रमुखता दी जाती है।

मात्रिक छन्दों में वर्णों की संख्या तथा लघु-गुरु के क्रम का नियम नहीं होता। उनमें मात्राओं में समानता होती है। जैसे–

ऽऽ। ऽ।। ऽ।।।ऽ।। ।ऽ ऽऽऽ।ऽ = 28 मात्रा।

निश्चेष्ट होकर बैठे रहना यह महा दुष्कर्म है। = 20 अक्षर।

ऽऽ। ।।ऽ ऽ। ऽऽ ऽ। ऽऽ ऽ।ऽ = 28 मात्रा।

न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है। = 17 अक्षर।

स्पष्ट है कि दोनों चरणों में मात्राएँ 28-28 हैं किन्तु अक्षर 20,17 हैं। लघु-गुरु का कोई भी क्रम नहीं है। अतः यह मात्रिक छन्द हुआ।

नीचे के चरणों को देखिए–

।।। ऽ।। ऽ। ।ऽ। ऽ = 4 गण।

दिवस का अवसान समीप था। = 12 वर्ण।

।।। ऽ।। ऽ। ।ऽ। = 4 गण।

गगन था कुछ लोहित हो चला।

ऊपर के चरणों में वर्णों का लघु गुरु क्रम भी समान है। अतः यह वर्णिक वृत हुआ।

झिल्ली झनकारे पिक, चातक पुकारे वन। = 8, 8 वर्ण।

इसमें केवल वर्णों की संख्या समान है।

कुछ मात्रिक छन्द

चौपाई– यह मात्रिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं; चरण के अन्त में जगण (।ऽ।) या तगण (ऽऽ।) नहीं होते हैं। प्रथम और द्वितीय चरणों में तुक समान होते हैं।

16 मात्रा।

बरनि न जाई मनोहर जोरी। = 16 मात्रा।

शोभा बहुत मोरी मति थोरी।। = 16 मात्रा।

राम लखन सिय सुन्दरताई। = 16 मात्रा।

सब चितवहिं चित मन मति लाई।।

रोला– यह मात्रिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 11, 13 मात्राओं के विराम से कुल 24 मात्राएँ होती हैं। अन्त में दो लघु या गुरु आना उत्तम है। जैसे–

= 11+13 = 24 मात्रा।

पर सहमा यह, रूप देख होता है विस्मय।

= 11+13 = 24 मात्रा।

आर्य लोग क्या एक समय थे ऐसे निर्भय 11

= 11+13 = 24 मात्रा।

क्या हम सब जो आज, बने हैं निर्बल कामी।

= 11+13 = 24 मात्रा।

रहते थे स्वाधीन समर में होकर नामी।।

हरिगीतिका–यह मात्रिक सम छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16 और 12 विराम से कुल 28 मात्राएँ होती हैं। अन्त में रगण (ऽ।ऽ) होने से सुनने में मधुर होता है। इसमें 5वीं, 12वीं, 18वीं मात्राएँ लघु होनी चाहिए। जैसे–

= 28 मात्रा।

अधिकार खोकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है।

= 28 मात्रा।

न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।।।

= 28 मात्रा।

इस ध्येय पर ही कौरवों और पाण्डवों का रण हुआ।।

= 28 मात्रा।

जो भव्य भारतवर्ष के कल्पांत का कारण हुआ।।

दोहा–यह मात्रिक अर्द्धसम छन्द है। इसके पहले और तीसरे चरण में 13, 13 और दूसरे तथा चौथे चरण में 11, 11 मात्राएँ होती हैं। दूसरे-चरण के अन्त में गुरु, लघु होते हैं। जैसे–

222 11 212 1112 11 21

= 13+11 = 24 मात्रा।

थोरेई गुन रीझते बिसराई वह बानि।

= 13+11 = 24 मात्रा।

तुमहू कान्ह मनौ भये, आजु-काल्हि के दानि।।

सोरठा–यह दोहे के ठीक विपरीत होता है , अर्थात् इसके पहले और तीसरे चरण में 11,11 और दूसरे तथा चौथे चरण में 13, 13 मात्राएँ होती हैं। जैसे–

= 11+13 = 24 मात्रा।

रहिमन मोहिं न सुहाय, अमिय पियावत मान बिनु।

= 11+13 = 24 मात्रा।

जो विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो।।

छप्पय–यह मात्रिक विषय तथा संयुक्त छन्द होता है। इसमें छः चरण होते हैं। इसके प्रथम चार चरणों में चौबीस-चौबीस मात्राएँ तथा अन्त के दोनों चरणों में अट्ठाइस-अट्ठाइस मात्राएँ होती हैं। प्रथम चार चरणों तक 12-13 पर यति होती है तथा पाँचवें और छठे चरणों में 15-13 पर यति होती है। छः पद होने के कारण इसे षट्पदी भी कहते हैं।

उदाहरण– निर्मल तेरा नीर, अमृत के सम उत्तम है,
शीतल मन्द-सुगन्ध, पवन हर लेता श्रम है।
षड्ऋतुओं का विविध, दृश्ययुक्त अद्भुत क्रम है,
हरियाली का फर्श, नहीं मखमल से कम है,
शुचि सुधा सींचता रात में, तुझ पर इन्द्र प्रकाश है।
हे मातृभूमि! दिन में तरणि, करता तम का नाश है।

बरवै–यह मात्रिक अर्द्धसम छन्द है जिसके प्रथम और तृतीय चरणों में 12 तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों में 7 मात्राएँ होती हैं। सम अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ चरणों में जगण या तगण के प्रयोग से कविता में सरसता पैदा होती है। यथा–

=12+7 = 19 मात्रा।

संकट सोच विमोचन, मंगल-गेहु

=12+7 = 19 मात्रा।

तुलसी राम नाम पर, करिय सनेहु

कुण्डलियां–यह मात्रिक विषय छन्द है जो दोहा और रोला छन्दों के मेल से बनता है। इसमें 6 चरण होते हैं। आरम्भ में दोहा तथा तत्त्पश्चात् दो छन्द रोला के होते हैं। इस तरह प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती है। दोहे के अन्त के शब्द रोला के आरम्भ में आते हैं। यथा–

जुगनू बोले सूर्य सों, हम बिन जग अँधियाला।
दिन के ठाकुर तुम भये, रात के हम कोतवाला।।
रात के हम कोतवाल, जुगनू अस नाम हमारो।
तुम आकाश में रहौ, हमरो पृथ्वी हारौ।।
कह गिरधर कविराय, सुनों हो मन के मगन्।
ऐंडि ऐंडि बतराय, सूर्य के सम्मुख जुगनू।।

कुछ वर्णिक शब्द

द्रुतविलम्बित–यह वर्णिक समवृत छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में अक्षरों की संख्या 12 होती है, तथा गणों की दृष्टि से क्रमशः नगण (।।।) भगण (ऽ।।) भगण (ऽ।।) और रगण (ऽ।ऽ) होता है। जैसे–

।।। ऽ । ।ऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ
दिवस का अवसान समीप था।
।।। ऽ।। ऽ।। ऽ। ऽ
गगन था कुछ लोहित हो चला।
।। ।ऽ।।ऽ ।। ऽ।ऽ
तरु शिखा पर थी अब राजती।
।।। ऽ ।।ऽ।। ऽ।ऽ
कमलिनी-कुल-बल्लभ की प्रभा।।

मनहरण–यह वर्णिक समृत छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16, 15 अक्षरों के विराम से कुल 31 अक्षर होते हैं। अन्त में एक 'गुरु' वर्ण होता है। चारों चरणों में तुक होता है। यथा–

साजि चतुरंग सैन अंग मैं उमंग धारि = 16 अक्षर।
सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत हैं। = 15 अक्षर।
'भूषन' भनत नाद बिहद नगारन के, = 16 अक्षर।
नदी-नद मद गैबरन के रलत हैं। = 15 अक्षर।
ऐल-फैल खेल भैल खलफ में गैस-गैल = 16 अक्षर।
गजन की ठैल-पैल सैल उसलत है। = 15 अक्षर।
तारा सो तरनि धूरि धारा मैं लगत जिनि = 16 अक्षर।
थारा पर पारा पारावार यों हलत हैं। = 15 अक्षर।

शिखरिणी–इस छन्द में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में यगण (।ऽऽ), मगण (ऽऽऽ) नगण (।।।) , सगण (।।ऽ) भगण (ऽ।।) तथा अन्त में लघु-गुरु होता है और प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं। 6 और 11 वर्णों या अक्षरों पर यति होती है।

।ऽऽ ऽऽ ।।। ।।ऽ ।।ऽ
उदाहरण– अनूठी आभा से सरस सुषमा से सुरस से।
बना जो देती थी, वह गुणमयी भू विपिन को।
निराले फूलों की, विविध दलवाली अनुपमा।
जड़ी-बूटी हो, हो, बहु फलवती थी विलसती।

मालिनी–यह समवृत वर्णिक छन्द है। इसके चार चरणों में प्रत्येक चरण 15 वर्ण या अक्षर का होता है तथा गणों की दृष्टि से हर चरण में एक नगण (।।।) एक मगण (ऽऽऽ) और अन्त में दो यगण (।ऽऽ) होते हैं। क्रमशः सात और आठ वर्णों या अक्षरों पर यति होती है।

।। ।। ।। ऽऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ
उदाहरण– प्रियपति! वह मेरा प्राण-प्यारा कहाँ है?
दुःख-जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है?
मुख लख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ–
वह हृदय हमारा नयन-तारा कहाँ है?

वंशस्थ–यह समवृत वर्णिक छन्द है। इसके चार चरणों में से प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं, पहला, दूसरा, छठा, सातवाँ, नवाँ तथा ग्यारहवाँ वर्ण या अक्षर लघु तथा शेष अक्षर गुरु होते हैं। इस प्रकार प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण (।ऽ।), तगण (ऽऽ।), जगण (।ऽ।) तथा रगण (ऽ।ऽ) होते हैं।

।ऽ। ऽऽ ।।ऽ ।ऽ।ऽ
उदाहरण– दिनांत था थे दिननाथ डूबते।
सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।
दिगंत में गो राज थी समुत्थिता।
विषाण नाना बजते सवेणु थे।।

अलंकार

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले शब्दों को अलंकार कहते हैं। जिस प्रकार नारी के सौन्दर्यवर्द्धन के लिए अनेक आभूषण होते हैं, उसी प्रकार भाषा के सौन्दर्य के उपकरणों को अलंकार कहते हैं।

शब्द और अर्थ के विशेष प्रयोग के कारण काव्य की भाषा में जो लालित्य या सौन्दर्य आ जाता है, उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार के भेद–इनके तीन भेद होते हैं।

1. शब्दालंकार 2. अर्थालंकार 3. उभयालंकार

1. शब्दालंकार

जहाँ वर्णों की पुनरावृत्ति अथवा समान शब्दों के एक से अधिक बार प्रयोग से भाषा में लालित्य उत्पन्न हो, वहाँ शब्दालंकार होता है।

शब्दालंकार के भेद–

शब्दालंकार के तीन भेद होते हैं– 1. अनुप्रास 2. यमक 3. श्लेष

1. अनुप्रास अलंकार : अनुप्रास शब्द अनु (बार-बार) और प्रास (चमत्कारित ढंग से रचना) दो शब्दों के मेल से बना है, अर्थात् जहाँ समान वर्णों की चमत्कारित ढंग से पुनरावृत्ति एक या अनेक बार हो भले ही स्वरों में वैषम्य हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण–'सम ससुर गुरु सुजन सुहाई।
सुठि सुन्दर सुशील सुखदाई।।

अनुप्रास अलंकार के भेद–

अनुप्रास अलंकार के तीन भेद होते हैं।

(अ) छेकानुप्रास
(ब) वृत्यानुप्रास
(स) लाटानुप्रास

(अ) छेकानुप्रास– जहाँ एक या अनेक वर्णों की आवृत्ति केवल दो बार होती है उसे छेकानुप्रास कहते हैं, जैसे–

''राधा के घर बैन सुनि, चीनी चकित सुभाय।
दास दुखी मिशरी मुरी, सुधा रही सकुचाय।''

इसमें च, द, म और स की आवृत्ति भाव दो बार हुई है। अतः यहाँ छेकानुप्रास है।

(ब) वृत्यानुप्रास–जहाँ एक या अनेक वर्णों की आवृत्ति बार-बार हो वहाँ वृत्यानुप्रास होता है, जैसे–

''तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।''

यहाँ 'त' शब्द की आवृत्ति बार-बार होने से वृत्यानुप्रास हुआ।

(स) लाटानुप्रास–जहाँ शब्दों या वर्णों की आवृत्ति बार-बार हो तथा प्रत्येक स्थान पर अर्थ भी वही रहे पर अन्वय करने पर भिन्नता आ जाय वहाँ लाटानुप्रास होता है, जैसे–

"लाली मेरे लाल की जित देखो तित लाल''।
''लाली देखन मैं चली मैं भी हो गयी लाल''।

यहाँ पर दोनों स्थानों में 'लाल' और 'लाली' शब्द देखने से एक ही प्रतीत होते हैं पर दोनों में अन्वय करने पर भिन्नता आ जाती है।

2. यमक अलंकार : जहाँ एक ही शब्द अधिक बार प्रयुक्त हो लेकिन अर्थ हर बार भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदाहरण– कनक-कनक तें सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराय जग, वा पाये बौराय।।

यहाँ कनक शब्द की दो बार आवृत्ति हुई है जिसमें एक कनक का अर्थ धतूरा, और दूसरे का स्वर्ण है।

3. श्लेष : जहाँ पर एक शब्द के दो अर्थ होते हैं, श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण– चिर जीवो जोरी जुरै, क्यों न सनेह गम्भीर
को घटि ये वृषभानुजा, 'व हलधर के वीर।।

यहाँ 'वृषभानुजा' और हलधर के दो-दो अर्थ हैं 'वृषभानुजा' शब्द का एक अर्थ है-वृषभानु की पुत्री राधिका और दूसरा अर्थ है–वृषभ की अनुजा अर्थात् बैल की बहन (गाय)। इसी प्रकार 'हलधर' के दो अर्थ हैं–एक हलधर अर्थात् श्री कृष्ण के भाई बलराम और दूसरा हलधर-हल को धारण करने वाला अर्थात् बैल। इन दोनों शब्दों के अर्थों से दोहे के अलग-अलग दो अर्थ निकलते हैं। अतः यह श्लेष अलंकार है।

2. अर्थालंकार : जहाँ शब्द के आन्तरिक अर्थ से भाषा या वाणी का सौन्दर्य बढ़े, वहाँ अर्थालंकार होता है।

अर्थालंकार के भेद–अर्थालंकार के 9 भेद होते हैं।

1. **उपमालंकारः** जहाँ दो वस्तुओं में अन्तर रहते हुए भी आकृति एवं गुण की समता दिखाई जाय वहाँ उपमालंकार होता है।
   उपमालंकार के अंग–
   उपमा के चार अंग हैं– 1. उपमेय 2. उपमान, 3. साधारण धर्म, और 4. वाचक।
   1. **उपमेय**–जिस वस्तु का वर्णन किया जाता है उसे उपमेय कहते हैं।
   2. **उपमान**–जिस वस्तु से समता की जाती है उसे उपमान कहते हैं।
   3. **साधारण धर्म**–जिस विशेषता के कारण उपमेय और उपमान की समानता दिखाई जाती है उसे साधारण धर्म कहते हैं।
   4. **वाचक**–जिस शब्द से उपमेय और उपमान की समता सूचित की जाती है, उसे वाचक कहते हैं।

   वाचक शब्द ये हैं–
   सो, से, सी, इव, तूल, लौ, सम, सदृश, समान।
   ज्यों, जैसे, इयि, सरिस, जिमि, उपमा वाचक जान।।
   उपमा का उदाहरण– "दादुर धुनि चहुँदिशा सुहाई।
   वेद पढ़त जनु वटु समुदाई"।।

इसमें 'दादुर' उपमेय, 'बटु' उपमान, 'धुनि' साधारण धर्म और 'जनु' वाचक है।

उपमालंकार के भेद– उपमा के दो भेद होते हैं– 1. पूर्णोपमा और 2. लुप्तोपमा।

1. **पूर्णोपमा**–इसमें उपमा के सभी अंग जैसे– उपमेय, उपमान, साधारण धर्म एवं वाचक उपस्थित होते हैं, अतः यह पूर्णोपमा कहलाती है, यथा–
   "सागर-सा गम्भीर ह्रदय हो,
   गिरि-सा ऊँचा हो जिसका मन''।
   इसमें सागर तथा गिरि उपमान, मन और ह्रदय उपमेय, सा वाचक, गम्भीर एवं ऊँचा साधारण धर्म हैं।
2. **लुप्तोपमा**–जहाँ उपमा के चारों अंगों में से किसी एक, दो या तीनों का लोप हो वहाँ लुप्तोपमा होती है।
   "कल्पना-सी अतिशय कोमल।"
   इसमें उपमेय लुप्त है। इसमें कल्पलता उपमान है, 'अतिशय कोमल' साधारण धर्म।

2. **रूपक अलंकार**–जहाँ उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाय वहाँ रूपक अलंकार होता है अर्थात् उपमेय और उपमान में कोई अन्तर न दिखाई पड़े।
   उदाहरण– उदित उदय गिरि मंच पर रघुबर बाल पतंग।
   बिकसे सन्त सरोज सब हरषे लोचन भृंग।।

यहाँ 'मंच' में उदय गिरि पर्वत का, 'रघुबर' में मोर के शिशु-सूर्य का, 'सन्त' में सरोज का तथा 'लोचन' में भृंग का अर्थात् भ्रमर का आरोप किया गया है।

रूपक अलंकार के भेद
रूपक अलंकार के तीन भेद होते हैं–

1. सम 2. अधिक 3. न्यून

(अ) सांग (ब) निरंग (ख) परंपरित

1. **सम रूपक**–इसमें उपमेय एवं उपमान में समानता दिखाई जाती है। कोई भी एक दूसरे की अपेक्षा कम या अधिक नहीं होता है– तब सम, अभेद या तद्रूप रूपक होता है।
   जैसे–मुख चंद्र है।
2. **अधिक रूपक**–जहाँ उपमेय में उपमान की तुलना में कुछ अधिकता दिखाई जाती है, तब वहाँ अधिक रूपक होता है। जैसे–मुख निष्कलंक चंद्रमा है।
3. **न्यून रूपक**–जब उपमान की तुलना में उपमेय को न्यून दिखाया जाता है, तब उसे न्यून रूपक कहते हैं। जैसे–मुख घर को प्रकाशित करने वाला चंद्रमा है।
   (अ) सांग रूपक–इसमें रूपक के सभी अंग उपस्थित रहकर उपमान का उपमेय पर आरोप प्रकट करते हैं।
   (ब) निरंग रूपक–इसमें उपमेय पर उपमान के प्रधान गुण का आरोप होता है।
   (स) परंपरित रूपक–इसमें दो रूपक होते हैं अर्थात् रूपक अपने स्पष्टीकरण के लिए अप्रधान रूपक पर आश्रित होता है।

   उदाहरण–
   "टूक-टूक हवै है मन मुकुट हमारे, हाथ।
   चूकिहू कठोर बैन-पाहन चलाओ ना।
   एक मनमोहन तो हिय बसि के उजारयौं हमें
   हिय में अनेक मनमोहन बसाओ ना।।"
   इनमें मन पर मुकुट का एवं बैन पर पाहन का आरोप किया गया है।

3. **उत्प्रेक्षा अलंकार :** जब उपमेय में उपमान से भिन्नता जानते हुए भी उसमें उपमान की संभावना की जाती है, तब उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इस अलंकार के वाचक शब्द मनु, मानो, इव, जनु, जानो, आदि होते हैं।

उदाहरण–

"लता-भवन ते प्रगट में तेहि अवसर दोऊ भाई।
निकसे जनु जुग विमल विधु जलद पटल बिलगाई।"

इसमें लता भवन से निकलते हुए दोनों भाई अर्थात् राम एवं लक्ष्मण को बादलों से निकलते हुए दो चन्द्रमा बताया गया है। यहाँ भिन्नता से अभिन्नता दिखाई गई है अतः उत्प्रेक्षा है।

उत्प्रेक्षा अलंकार के भेद :

उत्प्रेक्षा अलंकार के तीन भेद होते हैं–

(अ) वस्तुप्रेक्षा (ब) हेतुत्प्रेक्षा (स) फलोत्प्रेक्षा

(अ) वस्तुप्रेक्षा–जहाँ प्रस्तुत में अप्रस्तुत की सम्भावना प्रकट की जाय उसे वस्तुप्रेक्षा कहते हैं।

उदाहरण–

"सखि सोहत गोपाल के, उर गुज्जन की माल।
बाहर लसत मनो पिये, दावानल की ज्वाल।"

(ब) हेतु प्रेक्षा–जहाँ अहेतु में हेतु की सम्भावना की जाती है। अर्थात् जहाँ वास्तविक कारण को छोड़कर अन्य हेतु को मान लिया जाता है।

(स) फलोत्प्रेक्षा–इनमें वास्तविक फल के न होने पर भी उसी को फल मान लिया जाता है।

उदाहरण–

"खंजरी नहिं लखि परत कुछ रिन साँची बात।
बाल दृगन सम हीन को करन मनो तप जात।।"

4. **अपहनुति अलंकार :** अपहनुति का अर्थ ही होता है 'छिपना', अतः इस अलंकार में उपमेय को छिपाकर उपमान को स्थापित किया जाता है। अर्थात् इसमें सत्य को छिपाकर असत्य को सत्य बना दिया जाता है।

उदाहरण–

"उड़न पराग न चित्त उड़ावत।
भ्रमर भ्रमत नहीं जीव भ्रमावत।।"

अपहनुति अलंकार के भेद–इस अलंकार के छः भेद होते हैं :

अपहनुति अलंकार

शुद्ध | हेतु | पर्यस्त | भ्रान्त | धेय | केतव

5. **सन्देह अलंकार :** जहाँ दो वस्तुओं में समता होने के कारण दोनों के एक ही होने का सन्देह हो जाता है, पर निश्चय नहीं हो पाता, सन्देह अलंकार कहते हैं, अर्थात् उपमेय का उपमान के रूप में वर्णन किया जाता है।

उदाहरण–

"साड़ी बीच नारी है कि नारी बीच साड़ी है,
कि साड़ी ही की नारी है कि नारी ही की साड़ी है।"

इसमें चीर हरण के समय बढ़ती हुई द्रोपदी की साड़ी को देखकर नारी में सारी एवं सारी में नारी का सन्देह होता है। सन्देह और भ्रान्तिमान, अलंकार में यही अन्तर होता है कि सन्देह अलंकार में निश्चय नहीं होता, मात्र संशय ही रहता है परन्तु भ्रान्तिमान अलंकार में निश्चय रहता है।

6. **भ्रान्तिमान अलंकार :** जहाँ उपमान एवं उपमेय दोनों को एक साथ देखने पर उपमान का निश्चयात्मक भ्रम हो जाए अर्थात् जहाँ एक वस्तु को देखने पर दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाए, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है।

उदाहरण–

"पाँव महावर दैन को नाइनि बैठी आय।
फिरि-फिरि जानि महावरी एँड़ी मोड़ती जाय।

इसमें नायिका की लाल एँड़ियों को देखकर नाइन महावर समझ कर रगड़ती जाती है।

एक अन्य उदाहरण–

"नाक का मोती अधर की कांति से
बीज दाड़िम का समझ कर भ्रान्ति से।
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है
सोचता है, अन्य शुक यह कौन है?

इसमें नायिका की नुकीली नाक को देखकर तोता नाक में पहने मोती को अनार का दाना समझता है।

7. **दृष्टांत अलंकार :** जहाँ दो वाक्यों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब का भाव हो अर्थात् जहाँ दो वाक्यों के गुण तो अलग-अलग हों परन्तु प्रथम वाक्य को स्पष्ट करने के लिए दूसरे वाक्य का प्रयोग होता है। उसे दृष्टांत अलंकार कहते हैं।

उदाहरण–

"बड़े न छूजै गुननु, विरद बड़ाई पाइ।
कहत धतूरे सौ कनक, गहनों गदयों न जाई"

यहाँ पर गुणों से बना होना एक बात और 'गहने गढ़ना 'दूसरी बात है। फिर भी 'बिना गुणों के बड़ा होना 'तथा धतूरे से गहना गढ़ना दोनों धर्म समान ज्ञात होते हैं और पुनः प्रथम कथन का स्पष्टीकरण द्वितीय से किया गया है। अतः यहाँ दृष्टांत अलंकार है।

8. **व्याजस्तुति अलंकार :** इसमें किसी की व्यंग रूप में स्तुति की जाती है, अर्थात् जो इस स्तुति के योग्य नहीं है उसकी भी स्तुति की जाती है मात्र दिखाने के लिए पर वास्तव में यह स्तुति नहीं होती– यह एक प्रकार का व्यंग्य होता है।

उदाहरण–

"ऊधौ भलो कियो तुम आयो,
पर निर्गुण भक्ति की यह गठरी क्यों लायो!"

इसमें ब्रज-गोपियाँ ऊधो को आया देखकर चिढ़ जाती हैं कि ये क्यों चले आये और श्याम को क्यों नहीं लाये। घर पर आये मेहमान का स्पष्ट शब्दों में अनादर नहीं करके व्याज स्तुति द्वारा प्रशंसा करती हैं (वे कहती हैं कि ऊधो अच्छा हुआ कि तुम आ गये लेकिन निर्गुण भक्ति की गठरी क्यों उपहार स्वरूप हमारे लिए लाये हो? हमें यह गठरी नहीं चाहिए।

9. **अर्थान्तरन्यास अलंकार :** जहाँ सामान्य कथन का किसी भी विशेष कथन द्वारा समर्थन किया जाता है, वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है।

उदाहरण–

लोकन के अपवाद को डर करिए दिन-रैन।
रघुपति सीता परिहरी सुनत रजक कर बैन।।

इस उदाहरण में सामान्य कथन तो यह है कि लोक अपवाद से डरना चाहिए और विशेष कथन द्वारा समर्थन किया है कि राम ने भी धोबी की निंदा सुनकर सीता का परित्याग कर दिया था।

उभयालंकार : जहाँ शब्द में भी अलंकार हो और अर्थ में भी अलंकार हो वहाँ उभयालंकार की स्थिति होती है। उभयालंकार कोई अलंकार नहीं है। यह एक स्थिति है जिसमें शब्द और अर्थ दोनों में चमत्कार दिखते हैं। उभयालंकार का मतलब ही है– दोनों अलंकार यानी शब्द में भी अलंकार (शब्दालंकार) और अर्थ में भी अलंकार (अर्थालंकार)। वस्तुतः विद्यार्थी

शब्दालंकार और अर्थालंकार ही पढ़ते हैं। काव्य शास्त्रवेत्ताओं ने उभयालंकार को अलंकार के भेदों में जोड़ कर तीन भेद कर डाले हैं। वस्तुतः अलंकार के दो ही भेद हैं– शब्दालंकार और अर्थालंकार। उभय (दोनों) + अलंकार = उभयालंकार। श्रेष्ठ कवियों की रचनाओं में उभयालंकार प्राप्त होते हैं।

काव्य गुण

सर्वप्रथम आचार्य भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में दस गुणों को निर्धारित किया है, जो निम्न हैं–श्लेष, प्रसाद, समता, समाधि, माधुर्य, ओज, पद सौकुमार्य, अर्थ, व्यक्ति उदारता तथा कान्ति।

''श्लेषः प्रसादः सामाधिर्माधुर्य भोजः पदसौकुमार्यम।
अर्थस्थ च व्यक्तिरुदारता च कान्तिश्च काव्यार्थगुणा दशैते।।''

काव्य में आकर्षण, प्रवाह, ओज एवं चमत्कार उत्पन्न करने वाले तत्वों को गुणों की संज्ञा दी जाती है। तात्पर्य है–काव्य शोभा की वृद्धि करने वाले तत्व गुण हैं।

''काव्य-शोभायाः कर्त्तारो धर्मा गुणोंः।''

आचार्य भामह ने काव्य के केवल तीन गुण माने हैं, जो इस प्रकार हैं–माधुर्य, ओज तथा प्रसाद।

1. **माधुर्य :** सानुनासिक वर्णों (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) से युक्त छोटे-छोटे समास तथा कोमल वर्णों से परिपूर्ण गुण माधुर्य कहलाता है। श्रृंगार, करुण तथा शान्त रस में इस गुण का प्रयोग प्रभावशाली होता है। प्रेम, करुणा अथवा शान्ति के क्षणों में माधुर्यगुणयुक्त रचना सुनकर चित्त प्रसन्न हो उठता है।
2. **ओज :** कठोर वर्णों, लम्बे-लम्बे समासों से युक्त तथा ट वर्ग विशेष के प्रयोग वाला गुण ओज कहलाता है। यह गुण चित्त में उत्साह बढ़ाने वाला तथा दीप्ति लाने वाला है। इसका प्रयोग वीर, रौद्र तथा वीभत्स रसों में उपयुक्त होता है।
3. **प्रसाद :** प्रसाद गुण सरल शब्दावली से युक्त होता है, इसमें क्लिष्टता नाममात्र की भी नहीं होती। इसे सुनते ही अर्थ स्पष्ट हो जाता है। प्रसाद गुण का प्रयोग सभी रसों और सभी प्रकार की रचनाओं में होता है।

काव्य दोष

'दोष' शब्द 'दुण' धातु से बना है, जिसका सामान्य अर्थ है–भूल, त्रुटि, रोग, गुणरहित। आचार्य भरत ने गुण के अभाव को ही दोष माना है। आचार्य विश्वनाथ ने अनुसार, ''दोष वह तत्व है, जो रस की हानि करता है।'' आचार्य मम्मट मुख्यार्थ में बाधक तत्त्वों को दोष मानते हैं–''मुख्यार्थ हतिदोष।'' उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि काव्यानुभूति में अवरोध पैदा करने वाले, रस में बाधक और शब्दार्थ को नष्ट या कम करने वाले तत्व दोष माने जाते हैं।

काव्य-दोष के प्रमुख भेद निम्न हैं–

1. **शब्द दोष :** रस भाव के कर्णकटु शब्दों का प्रयोग, अप्रचलित, ग्रामीण, अश्लील, क्लिष्ट तथा अनुचितार्थ वाले शब्दों का प्रयोग शब्द दोष के अन्तर्गत आता है।
2. **अर्थ दोष :** काल का ध्यान न रखना, एक ही शब्द या भाव बार-बार दोहराना, शास्त्र विरुद्ध कथन और लोकविरुद्ध कथन अर्थ दोष के अन्तर्गत आता है।
3. **रस दोष :** रस दोष और उसके भावों की अभिधात्मक व्यंजना करना अथवा रस के विपरीत भावों का वर्णन या रस पुष्टि के पूर्व ही विपरीत कहकर रसभंग की स्थिति उत्पन्न करना रस दोष के अन्तर्गत आता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. काव्य में कितने स्थायी भाव प्रधान माने गए हैं?
A. पाँच B. सात
C. नौ D. ग्यारह

2. मन में जिसके प्रति भाव (स्थायी भाव) प्रकट होता है, इसे कहते हैं–
A. आलम्बन B. आश्रय
C. उद्दीपन D. संचारी भाव

3. संचारी भाव कितने माने गए हैं?
A. ग्यारह B. बाईस
C. तैंतीस D. सात

4. श्रृंगार रस का स्थायी भाव क्या है?
A. उत्साह B. शोक
C. रति D. विनोद

5. संचारी भाव
A. स्थायी भाव को पुष्ट करता है
B. स्थायी भाव के सहयोगी का काम करता है
C. अपना काम करने के बाद स्थायी भाव में ही लुप्त हो जाता है
D. उपरोक्त तीनों

6. रौद्र रस का स्थायी भाव क्या है?
A. शोक B. जुगुप्सा
C. क्रोध D. भय

7. वात्सल्य रस का स्थायी भाव क्या है?
A. स्नेह B. उत्साह
C. प्रेम D. जुगुप्सा

8. जिसके कारण हृदय में भाव प्रवृत्त होता है, वह क्या कहलाता है?
A. विभाव B. आलम्बन
C. उद्दीपन D. आश्रय

9. हास्य रस के कितने भेद हैं?
A. दो B. तीन
C. छह D. आठ

10. करुण रस का स्थायी भाव क्या है?
A. क्रोध B. भय
C. जुगुप्सा D. शोक

11. रस का आधार क्या है?
A. अनुभूति B. काव्य
C. संचारी भाव D. अलंकार

12. एक ओर अजगरहिं लखि एक ओर मृग राय।
विकल बटोही बीच ही परयौ मूरछा खाय।
उक्त पद में रस कौन-सा है?
A. करुण रस B. रौद्र रस
C. वीभत्स रस D. भयानक रस

13. जशोदा हरि पालने झुलावै।
हलरावै दुलरावै जोई सोई कछु गावै।
उक्त पद में रस कौन-सा है?
A. शृंगार रस B. वात्सल्य रस
C. वीभत्स रस D. वीर रस

14. 'क्या भाग रहा है भार देख?
तू मेरी ओर निहार देख
मैं त्याग चला निस्सार देख
अटकेगा मेरा कौन काम?
उक्त पद में रस कौन-सा है?
A. शांत रस B. वात्सल्य रस
C. रौद्र रस D. करुण रस

15. 'अखिल भुवन चर-अचर सब, हरि मुख में लखि मातु।
चकित भई गद्‌गद्‌ वचन, विकसित दृग पुलकातु।'
उक्त पद में रस कौन-सा है?
A. शांत रस B. वात्सल्य रस
C. अदभुत रस D. वीभत्स रस

16. इसमें रस कौन-सा है–
'बरतस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै, भौंहन हँसै, दैन कहै, नटिं जाय।।'
A. करुण रस B. हास्य रस
C. शृंगार रस D. रौद्र रस

17. 'सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीर।
हृदय न हरप विषाद कछु बोले श्रीरघुवीर।।
उक्त पद में रस कौन-सा है?
A. शांत रस B. शृंगार रस
C. वीर रस D. करुण रस

18. वीर रस कितने प्रकार के होते हैं?
A. तीन B. चार
C. पाँच D. छह

19. रस की भांति भाव के भी शुद्ध रूप में न होने और किसी विकार या दोष से युक्त होने के कारण उसे कहा जाता है–
A. रसाभाव B. भावाभाव
C. भाव-सन्धि D. भाव सबलता

20. जहाँ किसी भाव के शांत होते ही सहसा किसी दूसरे भाव के उदय होने का वर्णन होता है, वहां–
A. भावोदय होता है B. भाव-संधि होती है
C. भावसबलता होती है D. रसाभाव होता है

21. 'चेतक के पीछे दो काल, पड़े हुए ये ले असि ढाल।
उसके पथ में उनको मार, पावन की अपनी करवान।'
उक्त पंक्तियों में क्या है?
A. भाव-संधि B. भावोदय
C. भाव-शांति D. भावाभास

22. जहाँ दो भावों का संचार एक ही साथ वर्णन किया जाए, वहाँ क्या होता है?
A. भावाभास B. रसाभाव
C. भाव-शांति D. भाव-संधि

23. जहाँ दो से अधिक परस्पर विरोधी व उदासीन भावों के गड्डमड्ड होने अथवा एक साथ उदय होने का भाव हो, वहाँ क्या होता है–
A. भावाभास B. भाव-संधि
C. भाव-शांति D. भावसबलता

24. रस में विरोध कितने प्रकार का माना जाता है?
A. दो B. तीन
C. चार D. पाँच

25. जो स्वर दो स्वरों के योग से उच्चारित होते हैं, वे क्या कहलाते हैं?
A. ह्रस्व B. दीर्घ
C. व्यंजन D. गुरु

26. स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है, उस अवधि को क्या कहते हैं?
A. मात्रा B. ह्रस्व
C. लघु D. वर्ण

27. लघु वर्ण की कितनी मात्रा होती है?
A. एक B. दो
C. चार D. पाँच

28. गुरु वर्ण की कितनी मात्रा होती है?
A. एक B. दो
C. चार D. तीन

29. 'मान्धाता' शब्द में तीनों मात्राएँ क्या हैं?
A. लघु B. गुरु
C. ह्रस्व D. दीर्घ

30. छंदों में प्रवाह होना चाहिए, जिससे पढ़ने में रुकावट न हो। इस प्रवाह को क्या कहते हैं?
A. क्रम B. यति
C. गण D. गति

31. चरणों में रुकावट, विराम, विश्राम को क्या कहते हैं?
A. गण B. क्रम
C. गति D. यति

32. छंद में गण शब्द का क्या तात्पर्य है?
A. दो अक्षरों का समूह B. तीन अक्षरों का समूह
C. पाँच अक्षरों का समूह D. छह अक्षरों का समूह

33. छंदों में त्रि-वर्ण के कितने समूह हैं?
A. तीन B. चार
C. सात D. आठ

34. छंद के दो या चार चरणों के अन्त में जब कोई एक स्वर आता है, तब उस अक्षर की एकता को क्या कहते हैं?
A. यति B. गति
C. क्रम D. तुक

35. छंदों के कितने भेद हैं?
A. दो B. तीन
C. चार D. आठ

36. चौपाई छंद के एक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?
A. 16 B. 14
C. 17 D. 13

37. 'खंजन मंजु तिरीछे नयननि, निज पति कहेऊ तिन्हहि सिय सयननि।'
प्रस्तुत छंद क्या है?
A. चौपाई B. सोरठा
C. दोहा D. रोला

38. वर्णों के अनुसार गणों का मिलान कीजिए तथा दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए–

गण	वर्ण
(*a*) रगण	1. सावन
(*b*) तगण	2. सौतेला
(*c*) भगण	3. साधना
(*d*) मगण	4. साकार

कूट :

	(*a*)	(*b*)	(*c*)	(*d*)
A.	3	4	1	2
B.	1	2	4	3
C.	1	2	3	4
D.	3	4	2	1

39. वर्णों के अनुसार गणों का मिलान कीजिए तथा दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए–

गण	वर्ण
(*a*) नगण	1. सुभाषा
(*b*) यगण	2. सुजाता
(*c*) जगण	3. सरिता
(*d*) सगण	4. सरल

कूट :

	(*a*)	(*b*)	(*c*)	(*d*)
A.	2	1	4	3
B.	4	2	1	3
C.	1	2	3	4
D.	3	4	2	1

40. मगण गण में गण का क्या लक्षण है?
A. पहला वर्ण गुरु B. बीच वर्ण गुरु
C. अन्त वर्ण गुरु D. तीनों वर्ण गुरु

41. तगण गण में गण का क्या लक्षण है?
A. अन्त का वर्ण लघु B. बीच का वर्ण लघु
C. तीनों वर्ण लघु D. पहला वर्ण लघु

42. जगण गण में गण का क्या लक्षण है?
A. बीच का वर्ण लघु B. बीच का वर्ण गुरु
C. अन्त का वर्ण लघु D. अन्त का वर्ण गुरु

43. निम्न में अर्द्धमात्रिक छंद कौन-सा है?
A. दोहा B. रोला
C. सोरठा D. चौपाई

44. निम्न में अर्द्धसममात्रिक छंद कौन-सा है?
A. दोहा B. रोला
C. सोरठा D. कुण्डलिया

45. छंदों में विषम चरणों से तात्पर्य है–
A. पहला और दूसरा चरण
B. दूसरा और तीसरा चरण
C. पहला और चौथा चरण
D. पहला और तीसरा चरण

46. दोहे के सम्बन्ध में कौन-सा कथन सही नहीं है?
A. यह अर्द्ध मात्रिक छंद है
B. प्रत्येक दल में 24 मात्राएँ होती हैं
C. विषम चरणों में 11 मात्राएँ, सम चरणों में 13 मात्राएँ होती हैं
D. दूसरे और चौथे चरण की तुक मिलती है

47. चौपाई के एक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?
A. 16 मात्राएँ B. 13 मात्राएँ
C. 11 मात्राएँ D. 17 मात्राएँ

48. अर्द्धाली किसे कहते हैं?
A. एक चरण की चौपाई को
B. दो चरण की चौपाई को
C. चार चरण की चौपाई को
D. सोरठा छंद को

49. दोहे का उल्टा रूप किसे कहा जाता है?
A. सोरठा छंद B. रोला छंद
C. कुण्डलियां छंद D. चौपाई छंद

50. हरिगीतिका के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?
A. 4 मात्राएँ B. 3 मात्राएँ
C. 6 मात्राएँ D. 8 मात्राएँ

51. रोला के प्रत्येक चरण में कुल कितनी मात्राएँ होती हैं?
A. 2 मात्राएँ B. 6 मात्राएँ
C. 4 मात्राएँ D. 8 मात्राएँ

52. निम्न पद्य में कौन-सा छंद है?
'जीती जाती हुई जिन्होंने भारत बाजी
निज बल दल मेट विरोधी सबल कुराजी
जिनके आगे ठहर सके जंगी न जहाजी
हैं ये वही प्रसिद्ध छत्रपति भूप शिवाजी।'
A. सोरठा B. रोला
C. चौपाई D. कुण्डलिया

53. कुण्डलियां में कुल कितने पद होते हैं?
A. दो B. चार
C. छह D. आठ

54. कुण्डलियां में कुल कितनी मात्राएँ होती हैं?
A. 134 मात्राएँ B. 140 मात्राएँ
C. 142 मात्राएँ D. 144 मात्राएँ

55. वंशस्थ के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?
A. 10 मात्राएँ B. 12 मात्राएँ
C. 14 मात्राएँ D. 17 मात्राएँ

56. वंशस्थ में कौन-सा गण है?
A. ज त र B. र म ज
C. त स य D. भ न य

57. मालिनी छंद में प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?
A. 15 मात्राएँ B. 17 मात्राएँ
C. 22 मात्राएँ D. 24 मात्राएँ

58. वसन्ततिलका छंद में कौन-सा गण है?
A. त भ र र म B. त भ ज ज ग
C. त भ ग म स D. त भ र ज म

59. वसन्ततिलका छंद में कितनी मात्राएँ होती हैं?
A. 11 मात्राएँ B. 12 मात्राएँ
C. 14 मात्राएँ D. 24 मात्राएँ

60. ''केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।''
उक्त छंद कौन-सा है?
A. कुण्डलियां B. शिखरिणी
C. वंशस्थ D. हरिगीतिका

61. मनहरण छंद का दूसरा नाम क्या है?
A. कवित्त B. घनाक्षरी
C. गीतिका D. दण्डवृत्त

62. छप्पय में कुल कितने चरण होते हैं?
A. दो B. चार
C. छह D. पाँच

63. सरसी के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?
A. 12 मात्राएँ B. 24 मात्राएँ
C. 26 मात्राएँ D. 27 मात्राएँ

64. गीतिका के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?
A. 12 मात्राएँ B. 24 मात्राएँ
C. 26 मात्राएँ D. 28 मात्राएँ

65. तीमर के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?
A. 4 मात्राएँ B. 5 मात्राएँ
C. 10 मात्राएँ D. 12 मात्राएँ

66. उल्लाला के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?
A. 6 मात्राएँ B. 8 मात्राएँ
C. 10 मात्राएँ D. 13 मात्राएँ

67. हिन्दी में कौन-सा छंद विषम कहलाता है?
A. चौपाई B. दोहा
C. सोरठा D. छप्पय

68. मात्राओं और वर्णों की संख्या के विचार से सम छंदों के कितने भेद होते हैं?
A. दो B. तीन
C. चार D. छह

69. अलंकार के कितने मुख्य भेद होते हैं?
A. दो B. तीन
C. चार D. पाँच

70. काव्य का अस्थिर धर्म क्या है?
A. रस B. शब्द शक्ति
C. अलंकार D. छंद

71. जहाँ एक साथ शब्द और अर्थ दोनों में विशेषता हो, वहाँ–
A. शब्दालंकार होता है B. अर्थालंकार होता है
C. अनुप्रास अलंकार होता है D. उभयालंकार होता है

72. जब किसी कविता में एक शब्द का एक ही बार प्रयोग हो, परन्तु उसके दो या अधिक अर्थ हों, तब कौन-सा अलंकार होता है?
A. रूपक B. उपमा
C. प्रतीप D. श्लेष

73. निम्न में कौन-सा शब्दालंकार नहीं है?
A. उपमा, रूपक B. व्यतिरेक, दृष्टांत
C. अनुप्रास, यमक D. श्लेष, वक्रोक्ति

74. 'कुन्द इन्दु सम देह, उमा रमन करुण अयन'
उक्त पद में अलंकार कौन-सा है?
A. श्लेष B. उपमा
C. अनुप्रास D. रूपक

75. 'कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराय जग या पाये बौराय।'
उक्त पद में अलंकार कौन-सा है?
A. यमक B. अनुप्रास
C. रूपक D. प्रतीप

76. 'स्वर्ग की तुलना उचित ही है यहाँ, किन्तु सुरसरिता कहाँ सरयू कहाँ?
वह मरों को मात्र पार उतारती, यह यहीं से जीवितों को तारती।'
उक्त पद में अलंकार कौन-सा है?
A. श्लेष B. व्यतिरेक
C. रूपक D. भ्रान्तिमान

77. 'हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग।'
उक्त पद में अलंकार कौन-सा है?
A. उत्प्रेक्षा B. भ्रान्तिमान
C. दृष्टान्त D. अतिशयोक्ति

78. 'एक राज्य न हो बहुत से हों जहाँ, राष्ट्र का बल बिखर जाता है वहाँ,
बहुत तारे थे अँधेरा कब मिटा, सूर्य का आना सुना जब तब मिटा।'
उक्त पद में अलंकार कौन-सा है?
A. दृष्टान्त B. व्यतिरेक
C. भ्रान्तिमान D. उपमा

79. 'मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।
जो तन की झाईं परत, स्यामु हरित दुति होई।'
उक्त पद में अलंकार कौन-सा है?
A. व्यतिरेक B. श्लेष
C. उपमा D. अनुप्रास

80. जब शब्द (पद) में एक या कई व्यंजन एक से अधिक बार एक ही क्रम में आएं, वह कौन-सा अलंकार होता है?
A. यमक B. दृष्टान्त
C. भ्रान्तिमान D. अनुप्रास

81. काव्य में शब्दगत और अर्थगत सौंदर्य की वृद्धि उत्पन्न करने वाले साधन को क्या कहते हैं?
A. अलंकार B. रस
C. छंद D. शब्द-शक्ति

82. निम्न पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
''बहुरि अंजली बांधि ध्यान विधि को विधिवत गहि।
माँगी गंग उमंग सहित पूरब प्रसंग कहि।।''
A. अनुप्रास B. उत्प्रेक्षा
C. मालोपमा D. भ्रान्तिमान

83. अनुप्रास के कितने भेद होते हैं?
A. दो B. तीन
C. चार D. पाँच

84. जब कविता में एक ही शब्द दो या अधिक बार आये हर बार उसका अर्थ भिन्न हो, तो कौन-सा अलंकार होता है?
A. यमक B. अतिशयोक्ति
C. अनुप्रास D. प्रतीप

85. किस अलंकार में लक्षण से चमत्कार घटित होता है?
A. प्रतीप B. रूपक
C. अतिशयोक्ति D. अनन्वय

86. किस अलंकार में प्रसिद्ध उपमानों को उपमेय के रूप में कर लिया जाता है?
A. रूपक B. अनुप्रास
C. प्रतीप D. उपमा

87. प्रस्तुत वर्ण्य को बढ़ा-चढ़ाकर अतिरंजित रूप में अभिव्यक्त करने से कौन-सा अलंकार होता है?
A. अतिशयोक्ति B. दृष्टान्त
C. विभावना D. विशेषोक्ति

88. किस अलंकार में कविता में उपमेय और उपमान बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव से होते हैं?
A. अतिशयोक्ति B. प्रतीप
C. विशेषोक्ति D. दृष्टान्त

89. जब भ्रववश किसी एक चीज को देखकर उसके समान की किसी अन्य वस्तु का भ्रम हो तो कौन-सा अलंकार होता है?
A. विभावना B. उत्प्रेक्षा
C. भ्रान्तिमान D. विशेषोक्ति

90. उपमान की अपेक्षा उपमेय के वर्णन में जब उत्कृष्टता दिखाई जाती है, तो कौन-सा अलंकार होता है?
A. प्रतीप B. विभावना
C. उत्प्रेक्षा D. व्यतिरेक

91. किस अलंकार में उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाती है?
A. उत्प्रेक्षा B. विभावना
C. प्रतीप D. अनुप्रास

92. कविता में जब बिना पर्याप्त कारण के कार्य सम्पन्न होने का चमत्कार घटित होता है, तो कौन-सा अलंकार होता है?
A. प्रतीप B. उत्प्रेक्षा
C. अतिशयोक्ति D. विभावना

93. प्रबल कारणों के उपस्थित होते हुए भी जब कार्य सिद्ध न होने का वर्णन किया जाए तो कौन-सा अलंकार होता है?
A. विशेषोक्ति B. विभावना
C. व्यतिरेक D. प्रतीप

94. जहाँ किसी उक्ति में वक्ता के अभिप्रेत आशय से भिन्न अर्थ की कल्पना की जाये, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?
A. प्रतीप B. अनुप्रास
C. वक्रोक्ति D. विभावना

95. जहाँ सादृश्य के कारण किसी वस्तु को देखकर यह निश्चय न हो सके कि यह वही वस्तु है या अन्य, अर्थात् दोनों में दुविधा वही वस्तु है या अन्य, अर्थात् दोनों में दुविधा बनी रहे, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

A. भ्रान्तिमान B. विभावना
C. सन्देह D. प्रतीप

96. जहाँ सामान्य कथन का विशेष कथन द्वारा और विशेष कथन का सामान्य कथन द्वारा समर्थन किया जाता है, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

A. विशेषोक्ति B. विभावना
C. अर्थान्तरन्यास D. वक्रोक्ति

97. जहाँ कविता में एक ही चीज उपमान और उपमेय भाव से कही जाती है, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

A. प्रतीप B. अनन्वय
C. अनुप्रास D. रूपक

98. वर्णन में जो प्रस्तुत विषय के रूप में होता है (जैसे सीता का मुख) उसे क्या कहते हैं?

A. उपमेय
B. उपमान
C. धर्म
D. वाचक

99. वर्ण्य वस्तु की शोभा बढ़ाने के लिए जिस अप्रस्तुत (जैसे चन्द्रमा) की कल्पना की जाती है, उसे क्या कहते हैं?

A. धर्म B. वाचक
C. उपमान D. उपमेय

100. जिस गुण के कारण उपमेय और उपमान में समानता स्थापित की जाती है (जैसे सुन्दर), उसे क्या कहते हैं?

A. उपमेय B. उपमान
C. वाचक D. धर्म

उत्तरमाला

1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**
C	A	C	C	D	C	A	C	C	D
11	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
A	D	B	A	C	B	C	B	B	A
21	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**
B	D	D	B	B	A	A	B	B	D
31	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
D	B	D	D	C	A	A	A	B	D
41	**42**	**43**	**44**	**45**	**46**	**47**	**48**	**49**	**50**
A	B	A	C	D	C	A	B	A	D
51	**52**	**53**	**54**	**55**	**56**	**57**	**58**	**59**	**60**
C	B	C	D	B	A	A	B	C	D
61	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**
A	C	D	C	B	D	D	A	A	C
71	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
D	D	B	C	A	B	D	A	B	D
81	**82**	**83**	**84**	**85**	**86**	**87**	**88**	**89**	**90**
A	A	D	A	B	C	A	D	C	D
91	**92**	**93**	**94**	**95**	**96**	**97**	**98**	**99**	**100**
A	D	A	C	C	C	B	A	C	D

❑ ❑ ❑